

VI. ॥ १ a [इन्द्र इन्द्रि°] ॥ १ ॥ १ b [पितास] ॥ २ ॥ १० a [अग्ने वाक्यन्ति
सज्ञू°] ॥ ३ ॥ १० b ॥ ४ ॥ ११ ॥

VII. ॥ ११ ॥ १ ॥ १२ [यस्ते देव सोमाश्च° - °कथस्योपद्रुत उपद्रुतस्य भक्ष°]
॥ २ ॥ १३ ॥

VIII. ॥ ३४ [षोल्शि°] ॥ १ ॥ १४ ॥ IX. ॥ ३३ [षोल्शि°] ॥ १ ॥ १५ ॥

X. ॥ ३५ [षोल्शि°] ॥ १ ॥ १६ ॥ XI. ॥ ३६ [षोल्शी] ॥ १ ॥ ३७ ॥ २ ॥ १८ ॥

XII. ॥ अग्रऽआयूषि पवसऽआसुवोर्जमिषं च नः । अरे बाधस्व दुहुनाम्
[११. ३८.] ॥ उपयामगृहीतोऽस्यग्रे त्वा वर्चसऽष्टुष ते योनिरुग्रे त्वा
वर्चसे ॥ अग्रे वर्चस्वन्वर्चस्वाँस्त्वं देवेधसि वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूया-
सम् ॥ १ ॥ १९ ॥

XIII. ॥ ३८ [वर्चस्वन्वर्च°] ॥ १ ॥ २० ॥

XIV. ॥ ३९ a. b. c । इन्द्राजस्वन्नोर्जस्वाँस्त्वं देवेधस्योर्जस्वानहं मनुष्येषु भू-
यासम् ॥ १ ॥ २१ ॥

XV. ॥ ४० a. b. c [त्वा अजि] । सूर्य अजस्वन्आजस्वाँस्त्वं देवेधसि अजस्वा-
नहं मनुष्येषु भूयासम् ॥ १ ॥ २२ ॥

XVI. ॥ ४१ a. b. c [त्वा अजि] । सूर्य अजस्वन्आ° - - °यासम् ॥ १ ॥ २३ ॥

XVII. ॥ ७. ४२ - तस्युषश्च । ८. ४० b. c [त्वा अजि] । सूर्य अजस्वन्आ° - -
°यासम् ॥ १ ॥ २४ ॥

XVIII. ॥ ४४ ॥ १ ॥ २५ ॥ XIX. ॥ ४५ ॥ १ ॥ २६ ॥

XX. ॥ विश्वकर्मन्हुविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम् । मुह्यन्व-
न्येऽभितः सपत्ना इहास्माकं मधवा सूरिरस्तु [१७. २२.] ॥ ८. ४५ b. c
॥ १ ॥ २७ ॥